कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
website : www.chintanresearchjournal.com
Impact Factor : 4.012

यतेमहि स्वराज्ये
ISSN : 2229-7227

International Refereed

चिन्तन

अन्तरराष्ट्रीय मूल्यांकित रिसर्च जर्नल

(कला, साहित्य, मानविकी, समाज-विज्ञान, विधि, प्रबंधन, वाणिज्य एवं विज्ञान विषयों पर केंद्रित)

(Indexed & Listed at : Ulrich's Periodicals Directory ©, ProQuest. U.S.A.)
(Indexed & Listed at : Copernicus Poland)
(Indexed & Listed at : Research Bib, Japan)
(Indexed & Listed at : Indian Journal Index (IJIND EX))
(Indexed & Listed at : UGC Journal List No.41243)

वर्ष : 9 अंक : 33(II)
विक्रमी सम्वत् : 2076
जनवरी-मार्च 2019

संपादक
आचार्य (डॉ०) शीलक राम

यावत् जीवेत् सुखं जीवेत्

आचार्य अकादमी, भारत

ISO 9001 : 2008

ear : 9
ssue : 33 (Part-II)
anuary-March 2019
/ww. chintanresearchjournal.com
mpact Factor : 4.012

International Refereed

चिन्तन Chintan

Research Journal

रिसर्च जर्नल

(कला, साहित्य, मानविकी, समाज–विज्ञान, विधि, प्रबंधन, वाणिज्य एवं विज्ञान विषयों पर केंद्रित)

(Indexed & Listed at : Ulrich's Periodicals Directory ©, ProQuest . U.S.A.)
(Indexed & Listed at : Copernicus, Poland)
(Indexed & Listed at : Research Bib, Japan)
(UGC Approved List No. 41243)

संपादक

आचार्य (डॉ.) शीलक राम

यावत् जीवेत् सुखं जीवेत्

आचार्य अकादमी

भारत

ISO 9001:2008

वर्तमान महिला पत्रकारिता और महिला पत्रकार — 119-123
डॉ. ओमप्रकाश

देह का प्रश्न और समकालीन हिन्दी महिला उपन्यासकार — 124-127
डॉ. ओमप्रकाश

Exploring The Different Meanings of Veil in The *Purdah* Poems of Imtiaz Dhanker — 128-132
Shubh Lata

हिन्दी पत्रकारिता की भाषा और उसका बदलता चरित्र — 133-135
कुलदीप सिंह

Earthquake Studies In Himalayan — 136-140
Dr. Amit Kumar, Neetu Goswami

Compensation to Victim from Wrongdoer in India — 141-147
Jyoti

The Suggestions of The Farmers to Make Effective Water Conservation Campaig (The Farmers Perspective of Haryana) A Study — 148-152
Raj Kumar

आधुनिक नारी सशक्तिकरण : वास्तविकता/मिथ्या? — 153-156
डॉ. पुष्पा

Ecofeminism in Temsula Ao's *Laburnum for My Head* — 157-160
Pushpendra

प्राचीन एवं नवीन लोक कथाओं का आधुनिक प्रासंगिकता में तुलनात्मक अध्ययन — 161-165
राजश्री

Impact of HRM Practices on Organisational Performance — 166-172
Diksha Sharma

भारत के पश्चिमोत्तर क्षेत्र में उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र पटियाला द्वारा शास्त्रीय संगीत के प्रचार-प्रसार हेतु किए जा रहे प्रयास-एक अवलोकन — 173-179
गुरप्रीत सिंह

हिन्दुस्तानी संगीत में ख्याल गायन शैली का उद्गम — 180-182
जगदीश कुमार

शतपथ-ब्राह्मण का काल, कर्तृत्व और नामकरण — 183-187
कुसुम

Terrorism — 188-192
Mukul Gupta

Management of Working Capital in Indian Cement Industry — 193-202
CA Pranav Bansal

Female Solidarity against Pervasive Patriarchy : A Study of Anita Nair's Ladies Coupe — 203-205
Krishan

Analysis the Maximum Pressure of both feet in sportsmen participating in Volleyball, Hockey, Long Distance Runner and non sports person — 206-211
Sunil Dhanda

Women in Haryana Legislative Assembly — 212-218
Anukriti

Dying Declaration and its evidentiary value — 219-223
Miss Sonu

Buddhist Centres in the East Coast of Andhra Pradesh: Special Reference to Krishna District — 224-233
Dr. Palas Kumar Saha

International Referreed 'चिन्तन' अन्तरराष्ट्रीय रिसर्च जर्नल (ISSN: 2229-7227)
UGC List No.41243 वर्ष 9, अंक 33(II) (पृ.सं. 124-127)
Impact Factor : 4.012 विक्रमी सम्वत्: 2076 (जनवरी-मार्च 2019)

देह का प्रश्न और समकालीन हिन्दी महिला उपन्यासकार

डॉ॰ ओमप्रकाश
एसोसिएट प्रोफेसर
स्नातकोत्तर हिंदी-विभाग
आर॰के॰एस॰डी॰ कॉलेज, कैथल (हरियाणा)

शोध-आलेख सार

समाज के कोण से देखें तो आज बलात्कार ही एक मात्र ऐसा अपराध है जिसमें समाज की दृष्टि बलात्कार करने वाले अपराधी के स्थान पर बलात्कार की शिकार नारी पर टिकती है । नारी ही अपमानित, लांछित और पीड़ित होती है।

मुख्य-शब्द : त्रासदियां, उपभोक्तावादी, उत्पीड़न, श्रमजीवी, पर्दाफाश।

वर्तमान महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में नारी जीवन की सच्ची त्रासदियां उभर कर आई है। आज हिन्दी लेखिकाएं सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य को सामने रखते हुए उपभोक्तावादी एवं भौतिकवादी संस्कृति का पर्दाफाश करने में जुटी है। अबला कही जाने वाली औरत के सशक्त, जुझारू व्यक्तित्व को उन्होंने उकेरा है । अपने समय के गम्भीर और जटिल मुद्दों-कन्या भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा, सती प्रथा, बलात्कार, पारिवारिक शोषण एवं हिंसा, उत्पीड़न, नैतिकता, मर्यादा, संस्कार, फैशन, सौंदर्य प्रतियोगिता, परिवार तथा विवाह संस्था पर केन्द्रित रूढ़िगत सवालों से टकरा कर वे स्त्रियों के गर्भ एवं गैरकानूनी गर्भपात, स्त्री-पुरुष शारीरिक संबंध, श्रमजीवी स्त्री, वेश्या की स्थितियों जैसे गम्भीर विषयों पर चर्चा करती है । समकालीन महिला उपन्यासकार ज्वलंत सामाजिक मुद्दों पर खामोश नहीं है । स्त्री अस्मिता पर प्रश्न उठाने वाले उनके पात्र स्त्री के यथार्थ की आवाज बुलंद करने में सक्षम है । जीवन की तमाम उलझनों के बीच फंसी नारी का यथार्थ उनकी रचनाओं में मुखरित हुआ है ।

समकालीन महिला उपन्यासकारों में कृष्णा सोबती, प्रभाखेतान, मन्नू भंडारी, मृदुला गर्ग, राजी सेठ, मृणाल पांडे, नासिरा शर्मा, दिव्या जैन, चित्रा मुद्गल, सूर्यबाला, ममता कालिया, उषा शुक्ला, मैत्रेयी पुष्पा, आदि प्रमुख है । समय के साथ बदलते मूल्यों को इन रचनाकारों ने बारीकी से परखा है । समय की नब्ज टटोलने वाली ये लेखिकाएं साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान रखती है । यहाँ स्त्री समस्याओं पर गहरा चिन्तन प्रस्तुत करती है । कृष्णा सोबती एक ऐसी उपन्यासकार है जिनके उपन्यास समग्र नारी जीवन का आख्यान है । 'मित्रो मरजानी' उपन्यास की मित्रो पति से भरपूर प्रेम और संतुष्टि चाहती है जबकि पति उसे काबू में रखना चाहता है । मित्रो, मुंह में जो आता है बोलती है- तभी तो 'कटोरी सी दो आँखें नचाकर कहा - सोने सी अपनी देह झुर-झुरकर जला लूं या गुलजारी देवर की घरवाली की न्याई सुई-सिलाई के पीछे जान खपा लूं, सच तो यूँ कि जेठ का दिया राजपाट छोड़े मैं कोठे पर नहीं जा बैठी ।" स्त्री का दैहिक कामनाओं की पूर्ति का चुनाव अधिकांशतः स्त्री के पक्ष में नहीं जाता । डी॰ एच॰ लारेंस की कोनी जब मेलर्स के बलिष्ठ पौरुष को चुनती है 'दाने-दाने की मोहताज हो जाती है ।' अन्ना कैरेनिना का व्रान्स्की को चुनना और पति का मोह त्याग उसे मृत्यु सौंपता है । चार्ल्स बावेरी को छोड़कर एम्मा पाती है 'कलंक एवं मृत्यु' ।' कृष्णा सोबती भी 'मित्रो मरजानी' की सुमित्रा के देह राग को पहचानते हुए भी अन्ततः उसे बुढ़ापे की सुरक्षा के लिए पति के पास लौटा देती है।

है और पति द्वारा की जा रही 'हिंसा को जायज मानती है।'[1] स्त्री का यह सब सहना पुरुष को गलती का अहसास नहीं कराता बल्कि उसके अत्याचारों को बढ़ावा देता है।

उषा प्रियंवदा का उपन्यास 'पचपन खम्भे लाल दीवारें' उस दौर का उपन्यास है जब कुछ स्त्रियां पढ़-लिखकर आत्मनिर्भर हो जाया करती थी। घर की आर्थिक हालात के कारण वे विवाह ही नहीं करती बल्कि अपने मन की जरूरतों के लिए चोरी-छिपे प्रेम भी करती है। महानगरों में अकेले रहने का दंश भोगने वाली स्त्रियां दुःखी और विवाहित जीवन की अपेक्षा तलाक लेकर अकेले रहना बेहतर समझती है। उपन्यास की नायिका सुषमा, नील से पांच वर्ष बड़ी है। वह नील से प्रेम तो करना चाहती है पर विवाह नहीं। उसे डर है कि कोई कम उम्र की लड़की नील को उससे छीन ले जाएगी। गीतांजलि श्री का उपन्यास 'माई' अपने आप में एक लम्बी बहस भी है और शून्य में सार्थक संवाद भी। इसलिए सिस्टर सुनैना निष्कर्ष के रूप में कहती है "मुझे माई नहीं बनना। मैं वैसे तो माई नहीं बनूंगी, माई मुझे खुद माई नहीं बनाती। मैं चाहूंगी तो माई नहीं बन सकती। मैं वैसे भी माई नहीं बनूंगी, माई मुझे खुद माई नहीं बनाती। मैं चाहूंगी तो माई नहीं बन सकती। मुझे अपने इतिहास से लड़ना है, उसे नकारना है।" नायिका सुनैना बार-बार सवाल करती है कि माई को किसी से भी दैहिक संबंध बनाने की छूट है जबकि वह खुद ऐसा करना चाहे तो छिपकर रहना होगा। मन्नू भंडारी का 'आपका बंटी' सन् 1971 में प्रकाशित हुआ था। लेकिन लेखिका का वह 'बंटी' आज भी अनेक परिवारों में सांस ले रहा है। प्रायः स्त्रियां बच्चों की खातिर एक अत्याचारी पुरुष को सहन करती हैं। औरत कुटती-पीटती रहे, पर परिवार न टूटे, कम से कम बंटी की खातिर, परिवार टूटेगा तो समाज कैसे बचेगा। समग्रतः केवल इतना कि वर्तमान समाज और जीवन के प्रति पैनी नजर रखने वाली इन उपन्यासकारों की विशेषता उनकी अपनी संवेदनशीलता है। आज महिला उपन्यासकारों ने एक ओर साहित्य की मुख्यधारा में अपनी जगह बनाई है वहीं उनके उपन्यास स्त्री मुक्ति और अस्मिता की पहचान के रूप में सामने आये हैं। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में महिलाओं से बलात्कार की घटनाएं बढ़ी हैं। आज स्त्रियां लिंगभेद, यौन-शोषण, तलाक एवं घरेलू हिंसा का शिकार बन रही हैं। साहित्य इन घटनाओं से निरपेक्ष नहीं रह सकता। प्रबुद्ध लेखिकाओं ने स्त्री संबंधी ऐसे ज्वलंत प्रश्नों को उनके सम्पूर्ण परिप्रेक्ष्य और छटपटाहट के साथ पकड़ा है।

संदर्भ

1. कृष्णा सोबती, 'मित्रो मरजानी' 2004, पृ. 36
2. डॉ. एच. लारेंस, 'लेडी चैटरलीज़ लवर'
3. अन्ना करेनिना, 'लेव टॉलस्टॉय'
4. मैडम बावेरी, 'फ्लाबेयर'
5. कृष्णा सोबती, 'सूरजमुखी अंधेरे के' राजकमल प्रकाशन, 1972
6. प्रभा खेतान, 'छिन्नमस्ता'
7. हंस, 'भूमण्डलीकरण विशेषांक'
8. प्रभा खेतान, 'छिन्नमस्ता', पृ. 170-71
9. चित्रा मुद्गल, 'आवां' 2005, पृ. 303
10. मृदुला गर्ग, 'कठगुलाब' 2004, पृ. 22
11. ममता कालिया, 'दौड़', वाणी प्रकाशन, 2005, पृ. 89
12. क्षमा शर्मा, 'परछाई अन्नपूर्णा' पृ. 41
13. आउटलुक, 10 मार्च 2003, पृ. 64
14. गीतांजलि श्री, 'माई'